

राजनीतिक सशक्तिकरण में मुस्लिम महिलाओं की सहभागिता की भूमिका (शामली जनपद का एक अध्ययन)

डॉ० सुदीप

पीएच०डी०

राजनीति विज्ञान विभाग

मेरठ कॉलेज, मेरठ

ईमेल: sudeepbasyan@gmail.com

Reference to this paper should
be made as follows:

Received: 21-05-26
Approved: 29-06-26

डॉ सुदीप

राजनीतिक सशक्तिकरण में
मुस्लिम महिलाओं की सहभागिता
की भूमिका (शामली जनपद का
एक अध्ययन)

Vol. XVII, Sp. Issue July.2026
Article No.07, Pg. 038-045

Similarity Check: 13%

Online available at
<https://anubooks.com/special-issues?url=jgv-si-klsmm-mrt-july-2026>

DOI: <https://doi.org/10.31995/jgv.2026.v17iSI07.007>

सारांश

महिला सशक्तीकरण एक ऐसी परिवर्तनकारी प्रक्रिया है, जो महिलाओं को सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक तथा राजनीतिक जीवन में समान अवसरों के साथ निर्णय लेने की क्षमता प्रदान करती है। किसी भी लोकतांत्रिक व्यवस्था में महिलाओं की प्रभावी राजनीतिक भागीदारी उनके वास्तविक सशक्तीकरण का महत्वपूर्ण संकेतक मानी जाती है। राजनीतिक प्रतिनिधित्व के माध्यम से महिलाएँ न केवल नीति-निर्माण की प्रक्रिया में अपनी भूमिका निभाती हैं, बल्कि समाज के व्यापक हितों से जुड़े निर्णयों को भी प्रभावित करती हैं। भारतीय परिप्रेक्ष्य में मुस्लिम महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी अपेक्षाकृत सीमित दिखाई देती है। इसके पीछे अशिक्षा, आर्थिक निर्भरता, रूढ़िवादी सामाजिक मान्यताएँ, पर्दा प्रथा, पितृसत्तात्मक व्यवस्था, राजनीतिक जागरूकता का अभाव तथा संसाधनों तक सीमित पहुँच जैसे अनेक कारक उत्तरदायी हैं। यद्यपि संविधान ने सभी नागरिकों को समान अधिकार और अवसर प्रदान किए हैं, फिर भी व्यवहारिक स्तर पर मुस्लिम महिलाओं को अनेक सामाजिक एवं संस्थागत चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। वर्तमान समय में शिक्षा के विस्तार, संवैधानिक अधिकारों के प्रति बढ़ती जागरूकता तथा सामाजिक परिवर्तन के परिणामस्वरूप मुस्लिम महिलाओं में राजनीतिक चेतना और आत्मविश्वास का विकास हो रहा है। इससे उनके सामाजिक, शैक्षिक एवं राजनीतिक सशक्तीकरण की संभावनाएँ निरंतर सुदृढ़ होती दिखाई देती हैं।

मुख्य शब्द: महिला सशक्तीकरण, मुस्लिम महिलाएँ, राजनीतिक सहभागिता, राजनीतिक जागरूकता, नेतृत्व क्षमता

महिला सशक्तीकरण का आशय महिलाओं को ऐसा सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक एवं राजनीतिक वातावरण उपलब्ध कराना है, जिसमें वे स्वतंत्र रूप से निर्णय लेने, अपने अधिकारों का उपयोग करने तथा समाज के विकास में सक्रिय योगदान देने में सक्षम हों। यह केवल अधिकारों की प्राप्ति तक सीमित नहीं है, बल्कि आत्मविश्वास, नेतृत्व क्षमता, संसाधनों तक पहुँच और लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं में सार्थक भागीदारी का भी द्योतक है। राजनीतिक सशक्तीकरण इसी व्यापक प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण आयाम है, क्योंकि राजनीति के माध्यम से ही नीतियों का निर्माण, संसाधनों का वितरण तथा जनहित से जुड़े निर्णय लिए जाते हैं।

इस अध्ययन में मुस्लिम महिलाओं के राजनीतिक सशक्तीकरण का विश्लेषण उनके नेतृत्व व्यवहार, सार्वजनिक जीवन में सक्रियता तथा राजनीतिक संस्थाओं में सहभागिता के आधार पर किया गया है। इसके अंतर्गत स्थानीय समस्याओं को निर्वाचित प्रतिनिधियों के समक्ष प्रस्तुत करना, राजनीतिक बैठकों में भाग लेना अथवा उनका संचालन करना, राजनीतिक दलों एवं सामाजिक संस्थाओं में दायित्व निभाना, समितियों का नेतृत्व करना तथा सामाजिक कार्यक्रमों एवं संगोष्ठियों के आयोजन में भूमिका जैसे संकेतकों का अध्ययन किया गया है। इन आयामों के माध्यम से यह समझने का प्रयास किया गया है कि मुस्लिम महिलाओं में नेतृत्व एवं राजनीतिक सहभागिता का स्तर किस प्रकार विकसित हो रहा है। राजनीतिक जागरूकता किसी भी नागरिक के लोकतांत्रिक विकास का आधार मानी जाती है। इसका तात्पर्य राजनीतिक व्यवस्था, शासन संस्थाओं, संवैधानिक मूल्यों, नागरिक अधिकारों एवं सार्वजनिक नीतियों के प्रति जानकारी तथा समझ से है। जब नागरिक राजनीतिक प्रक्रियाओं के प्रति जागरूक होते हैं, तब वे चुनाव, नीति-निर्माण एवं सार्वजनिक विमर्श में अधिक प्रभावी ढंग से भाग लेते हैं। महिलाओं के संदर्भ में राजनीतिक जागरूकता न केवल उनकी सहभागिता को बढ़ाती है, बल्कि उन्हें अपने अधिकारों के प्रति सजग बनाकर सामाजिक परिवर्तन की दिशा में सक्रिय भूमिका निभाने के लिए भी प्रेरित करती है।

भारतीय संविधान ने महिलाओं और पुरुषों को समान अधिकार प्रदान किए हैं, किंतु व्यावहारिक स्तर पर महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी अभी भी अपेक्षित स्तर तक नहीं पहुँच सकी है। विशेष रूप से मुस्लिम महिलाओं को सामाजिक रूढ़ियों, सीमित शैक्षिक अवसरों, आर्थिक निर्भरता तथा पितृसत्तात्मक संरचना जैसी अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। इसके बावजूद स्वतंत्रता के पश्चात् शिक्षा के प्रसार, लोकतांत्रिक संस्थाओं के विस्तार तथा महिला संगठनों के प्रयासों से महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी में धीरे-धीरे वृद्धि हुई है। भारतीय महिला संघ, राष्ट्रीय महिला परिषद तथा अखिल भारतीय महिला सम्मेलन जैसे संगठनों ने महिलाओं में राजनीतिक चेतना विकसित करने तथा सार्वजनिक जीवन में उनकी भागीदारी को प्रोत्साहित करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। परिणामस्वरूप आज महिलाएँ राजनीतिक एवं सामाजिक नेतृत्व के विविध क्षेत्रों में अपनी उपस्थिति दर्ज करा रही हैं।

साहित्य समीक्षा

सिद्दीकी, एच.वाई. ने अपनी पुस्तक *Muslim Women in Transition: A Social Profile* (1987) में भारतीय मुस्लिम महिलाओं की सामाजिक एवं शैक्षिक स्थिति का विश्लेषण करते हुए यह स्पष्ट किया है कि शिक्षा और आर्थिक संसाधनों की कमी उनके समग्र विकास में प्रमुख बाधाएँ हैं। लेखक के अनुसार रूढ़िवादी सामाजिक संरचना तथा पर्दा प्रथा ने महिलाओं की सार्वजनिक जीवन में सहभागिता को सीमित किया है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् भी मुस्लिम महिलाओं के विकास की गति अपेक्षाकृत धीमी रही, जिसका प्रमुख कारण शैक्षिक पिछड़ापन और आर्थिक विषमता है।

घोष, श्रीकान्त ने अपनी पुस्तक *Muslim Politics in India* (1987) में भारतीय राजनीति में मुस्लिम समुदाय की भूमिका तथा उसके ऐतिहासिक विकास का विश्लेषण प्रस्तुत किया है। लेखक के अनुसार भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान विभिन्न समुदायों को एक साझा मंच प्रदान किया, जबकि मुस्लिम लीग की राजनीतिक दिशा अंततः देश के विभाजन तक पहुँची। स्वतंत्र भारत ने संविधान के माध्यम से धर्मनिरपेक्ष राज्य की स्थापना की और सभी नागरिकों को समान अधिकार प्रदान किए, तथापि सामाजिक एवं राजनीतिक स्तर पर साम्प्रदायिक प्रवृत्तियाँ और

असमानताएँ पूर्णतः समाप्त नहीं हो सकीं। यह परिस्थिति मुस्लिम समाज, विशेषकर महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी और सामाजिक प्रगति को भी प्रभावित करती रही है।

लतिफ, शाहिदा ने अपनी पुस्तक "मुस्लिम वूमेन इन इण्डिया पॉलिटिकल एण्ड प्राइवेट रियलटिस 1890-1980", (1990) का अध्ययन कार्य भारत के प्रमुख शहरों की मुस्लिम महिलाओं के संदर्भ में किया है। इसके लिए उन्होंने 1332 सूचनादाताओं का चयन किया। अपने अध्ययन कार्य में उन्होंने मुस्लिम महिलाओं की राजनीतिक और निजी वास्तविकताओं को 1890-1980 के संदर्भ में देखते हुए उनमें होने वाले परिवर्तन के अध्ययन का प्रयास किया। अपने अध्ययन में उन्होंने पाया कि मुस्लिम महिलाओं की स्थिति में अत्यधिक परिवर्तन आया है जो कि समयानुसार तथा परिस्थितिजन्य दोनों हैं। आलेखानुसार समय के साथ विभिन्न नेताओं द्वारा मुस्लिम महिलाओं के अधिकारों के संदर्भ में नयी परिस्थितियाँ उदय की गई हैं।

कुमारी, रंजना ने अपनी पुस्तक "वूमेन इन डीसिजन मेकिंग", (1992) में स्पष्ट किया है कि राजनीतिक जीवन व निर्णय निर्माण में महिलाओं की भागीदारी पुरुषों की तुलना में अत्यंत निम्न है तथा इसमें खास परिवर्तन हेतु सरकारों, राजनीतिक दलों, गैर सरकारी संगठनों, शिक्षण संस्थाओं तथा स्वयं महिलाओं द्वारा प्रयास करना आवश्यक है।

कौशिक, सुशीला ने अपनी पुस्तक "पार्टिसिपेशन ऑफ वूमेन इन पॉलिटिक्स", (1993) में स्पष्ट किया है कि 73वें संवैधानिक संशोधन के उपरान्त महिलाओं के लिए किए गए एक-तिहाई आरक्षण के संवैधानिक प्रावधानों ने महिलाओं हेतु मार्ग तो खोल दिया है परन्तु मार्ग अभी निष्कण्टक नहीं हुए हैं जिसके कारण प्रावधानों का लाभ उन तक निर्बाध रूप से नहीं पहुंच पा रहे हैं। लेकिन जिन भी महिलाओं ने अवसर को पहचाना है आज वह राजनीतिक क्षेत्र में अपनी पहचान बनाने में भी सफल प्रतीत हो रही हैं। राजनीति में महिला भागीदारी हेतु लेखिका द्वारा महत्वपूर्ण सुझाव के रूप में स्थानीय स्वशासन की संस्थाओं में महिलाओं हेतु शिक्षा एवं प्रशिक्षण की महत्ता पर बल दिया गया है।

शोध के उद्देश्य—

1. राजनीतिक प्रक्रियाओं में महिलाओं की प्रभावी भागीदारी उनके सशक्तीकरण का महत्वपूर्ण आधार बनती है।
2. महिलाओं के राजनीति में आने से उनकी सामाजिक स्थिति में परिवर्तन आता है।
3. मुस्लिम महिलाओं की अपेक्षा हिन्दू महिलाएं राजनीति सहभागिता में अधिक सक्रिय हैं।
4. मुस्लिम महिलाओं की सहभागिता राष्ट्र के महत्वपूर्ण पदों पर आवश्यक है।

शोध प्रविधि एवं शोध क्षेत्र

प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक (Descriptive) शोध प्रविधि के अंतर्गत सर्वेक्षण पद्धति का उपयोग किया गया है। अध्ययन क्षेत्र के रूप में शामली जनपद का चयन किया गया। शोध हेतु आवश्यक प्राथमिक आँकड़ों के संकलन के लिए यादृच्छिक प्रतिदर्शन (Random Sampling) विधि अपनाई गई, जिसके अंतर्गत 200 मुस्लिम महिलाओं को प्रतिदर्श के रूप में सम्मिलित किया गया।

शोध उपकरण, प्रतिदर्श एवं सांख्यिकीय विश्लेषण

अध्ययन के लिए आवश्यक तथ्यों के संकलन हेतु स्वनिर्मित साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया गया। एकत्रित आँकड़ों का वर्गीकरण उत्तरदात्रियों की आयु, शैक्षिक स्तर, वैवाहिक स्थिति तथा सामाजिक पृष्ठभूमि जैसे आधारों पर किया गया। प्राप्त तथ्यों का विश्लेषण एवं व्याख्या शोध के उद्देश्यों और परिकल्पनाओं के अनुरूप की गई। सांख्यिकीय विश्लेषण के लिए प्रतिशत विधि (Percentage Method) का उपयोग किया गया, जिसके माध्यम से प्राप्त निष्कर्षों को सरल एवं स्पष्ट रूप में प्रस्तुत किया गया।

कुल 200 मुस्लिम महिला उत्तरदाताओं की आयु को चार वर्गों में बांटा है। जिनमें से 37.5% 18 से 30 वर्ष की आयु, लगभग 28% उत्तरदाता 31 से 40 वर्ष की आयु के, 19.5% उत्तरदाता 41 से 50 वर्ष की आयु वर्ग के और

लगभग 15 उत्तरदाता 51 से 60 वर्ष के उत्तरदाता रहे। वर्ग के आधार पर सामान्य वर्ग में लगभग 39.5 प्रतिशत मुस्लिम महिलाएँ हैं। लगभग 60.5% मुस्लिम महिलाएँ अन्य पिछड़ा वर्ग से हैं। आय के आधार पर कुल उत्तरदाताओं में से 33.0 प्रतिशत उत्तरदाताओं के परिवार की आय 30 हजार से 55 हजार है, 15.0 प्रतिशत के परिवार की आय 55,001 से 75 हजार के बीच है, 21.0 प्रतिशत की 75,001 से 1 लाख है तथा 31.0 प्रतिशत की पारिवारिक आय 1 लाख से अधिक है। उत्तरदाताओं के रूप में 200 मुस्लिम महिलाओं को अपने अध्ययन में सम्मिलित किया है। जिनमें से 34% अशिक्षित महिलाएँ हैं तथा 66% शिक्षित महिलाएँ हैं, जिनमें हाईस्कूल या उससे कम 13.5% महिलाएँ, 8.5% इण्टर की हुई महिलाएँ और 44% स्नातक या उससे अधिक पढ़ी हुई महिलाएँ हैं। वैवाहिक स्थिति के अनुसार सम्बंधित महिला उत्तरदाताओं की वैवाहिक स्थिति में 65% महिलाएँ विवाहित, लगभग 26.5% अविवाहित महिलाएँ, लगभग 7.5% महिलाएँ विधवा हैं तथा 1% महिलाएँ तलाकशुदा हैं। इन महिलाओं में 65% विवाहित महिलाओं की संख्या सबसे अधिक है। कुल महिला उत्तरदाताओं में से उनकी परिवार की कुल वार्षिक आय के आधार पर लगभग 33% उत्तरदाता 30000–55000 वार्षिक आय वाले रहें। 15% उत्तरदाता 56 हजार से 75 हजार वार्षिक आय वाले, लगभग 21% उत्तरदाता 76 हजार से 1 लाख वाले और 31% 1 लाख से 7 लाख वाले उत्तरदाता मिले।

प्रश्न 1. क्या आप राजनीति में भाग लेना पसंद करती हैं?

तालिका-1

क्रमांक	विवरण	आवृत्ति	प्रतिशत
1	हाँ	30	15.0
2	नहीं	170	85.0
	कुल योग	200	100

कुल महिला उत्तरदाताओं से प्रश्न किया कि क्या आप राजनीति में भाग लेना पसंद करती हैं, तो 30 महिला उत्तरदाताओं ने हाँ कहा व 170 ने नहीं कहा। अतः स्पष्ट है कि न्यूनतम 15.0 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा कि वे राजनीति में भाग लेना पसंद करती हैं, परन्तु अधिकतम 85.0 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा कि वे राजनीति में भाग लेना पसंद नहीं करती हैं।

प्रश्न 2. क्या आप किसी राजनीतिक दल की सदस्य हैं?

तालिका 2

क्रमांक	विवरण	आवृत्ति	प्रतिशत
1	हाँ	3	1.5
2	नहीं	197	98.5
	कुल योग	200	100

जब उत्तरदाताओं से प्रश्न किया गया कि क्या आप किसी राजनीतिक दल की सदस्य हैं, तो कुल उत्तरदाताओं में से 03 उत्तरदाताओं ने हाँ कहा तथा 197 ने नहीं कहा। जिससे स्पष्ट है कि न्यूनतम 1.5 प्रतिशत महिला उत्तरदाता किसी राजनीतिक दल की सदस्य हैं व अधिकतम 98.5 प्रतिशत उत्तरदाता किसी भी राजनीतिक दल की सदस्य नहीं हैं।

प्रश्न 3. क्या आप मानती हैं कि राजनीति में आने से आपकी घरेलू और सामाजिक स्थिति में परिवर्तन आयेगा?

तालिका 3

क्रमांक	विवरण	आवृत्ति	प्रतिशत
1	हाँ	33	16.5
2	नहीं	167	83.5
	कुल योग	200	100

कुल महिला उत्तरदाताओं से प्रश्न किया गया कि क्या राजनीति में आने से आपकी घरेलू और सामाजिक स्थिति में परिवर्तन आयेगा, तो 33 उत्तरदाताओं ने हाँ कहा और 167 उत्तरदाताओं ने नहीं कहा। इस प्रकार अधिकतम 83.5 प्रतिशत उत्तरदाता का मानना है कि राजनीति में आने महिलाओं की घरेलू और सामाजिक स्थिति में परिवर्तन नहीं आयेगा तथा न्यूनतम 16.5 प्रतिशत ने कहा कि राजनीति में आने से महिलाओं की घरेलू और सामाजिक स्थिति में परिवर्तन आयेगा।

प्रश्न 4. क्या आप मानती हैं कि मुस्लिम महिलाओं का राजनीति में आगे बढ़ने पर कुछ समृद्ध मुस्लिमों की महत्वकांक्षा बीच में आती है?

तालिका 4

क्रमांक	विवरण	आवृत्ति	प्रतिशत
1	हाँ	138	68.5
2	नहीं	62	31.5
	कुल योग	200	100

जब महिला उत्तरदाताओं से प्रश्न किया गया कि क्या मुस्लिम महिलाओं का राजनीति में आगे बढ़ने पर कुछ समृद्ध मुस्लिमों की महत्वकांक्षा बीच में आती है, तो 138 उत्तरदाताओं ने हाँ कहा और 62 उत्तरदाताओं ने नहीं कहा। इस प्रकार अधिकतम 68.5 प्रतिशत उत्तरदाता मानती हैं कि मुस्लिम महिलाओं का राजनीति में आगे बढ़ने पर कुछ समृद्ध मुस्लिमों की महत्वकांक्षा बीच में आती है तथा न्यूनतम 31.5 प्रतिशत उत्तरदाता मानती हैं कि मुस्लिम महिलाओं का राजनीति में आगे बढ़ने पर कुछ समृद्ध मुस्लिमों की महत्वकांक्षा बीच में नहीं आती है।

प्रश्न 5. क्या आप सरकार द्वारा चलाई गई नीतियों और योजनाओं के बारे में जानती हैं?

तालिका 5

क्रमांक	विवरण	आवृत्ति	प्रतिशत
1	हाँ	157	78.5
2	नहीं	43	21.5
	कुल योग	200	100

जब महिला उत्तरदाताओं से प्रश्न किया कि क्या आप सरकार द्वारा चलाई गई नीतियों और योजनाओं के बारे में जानती हैं, तो 157 उत्तरदाताओं ने हाँ कहा और 43 उत्तरदाताओं ने नहीं कहा। इस प्रकार अधिकतम 78.5 प्रतिशत उत्तरदाता सरकार द्वारा चलाई गई नीतियों और योजनाओं के बारे में जानती हैं तथा न्यूनतम 21.5 प्रतिशत उत्तरदाता सरकार द्वारा चलाई गई नीतियों और योजनाओं के बारे में नहीं जानती हैं।

प्रश्न 6. मुस्लिम महिलाओं की अपेक्षा हिन्दू महिलाएं राजनीति सहभागिता में अधिक सक्रिय होती हैं?

तालिका 6

क्रमांक	विवरण	आवृत्ति	प्रतिशत
1	हाँ	176	88.0
2	नहीं	24	12.0
	कुल योग	200	100

जब उत्तरदाताओं से प्रश्न किया गया कि क्या मुस्लिम महिलाओं की अपेक्षा हिन्दू महिलाएं राजनीति सहभागिता में अधिक सक्रिय होती हैं, तो कुल उत्तरदाताओं में से 175 उत्तरदाताओं ने हाँ कहा और 125 ने नहीं कहा। जिससे ज्ञात है कि अधिकतम 87.5 प्रतिशत महिला उत्तरदाता मुस्लिम महिलाओं की अपेक्षा हिन्दू महिलाएं राजनीति सहभागिता में अधिक सक्रिय होती हैं तथा न्यूनतम 12.5 प्रतिशत उत्तरदाता मुस्लिम महिलाओं की अपेक्षा हिन्दू महिलाएं राजनीति सहभागिता में अधिक सक्रिय होती हैं।

प्रश्न 7. आपके अनुसार कौन सा राजनीतिक दल मुस्लिम महिलाओं के सशक्तिकरण में सहायक है?

तालिका 7

क्रमांक	विवरण	आवृत्ति	प्रतिशत
1	भाजपा	43	21.5
2	कांग्रेस	26	13.0
3	समाजवादी पार्टी	73	36.5
4	बसपा	01	0.5
5	कोई नहीं	53	26.5
	कुल योग	200	100

जब उत्तरदाताओं से प्रश्न किया गया कि आपके अनुसार कौन सा राजनीतिक दल मुस्लिम महिलाओं के सशक्तिकरण में सहायक है, तो कुल उत्तरदाताओं में से 21.5 प्रतिशत ने महिला सशक्तिकरण में भाजपा को सही बताया, कांग्रेस को 13.0 प्रतिशत ने, समाजवादी पार्टी को 36.5 प्रतिशत ने, बसपा को 0.5 प्रतिशत ने महिलाओं के सशक्तिकरण में सहायक तथा 26.5 प्रतिशत ने इस सम्बन्ध में कोई राय नहीं दी।

प्रश्न 8. क्या आप मुस्लिम महिलाओं की सहभागिता राष्ट्र के महत्वपूर्ण पदों पर आवश्यक मानती हैं?

तालिका 8

क्रमांक	विवरण	आवृत्ति	प्रतिशत
1	हाँ	101	50.5
2	नहीं	99	49.5
	कुल योग	200	100

महिला उत्तरदाताओं से पूछा गया कि क्या आप मुस्लिम महिलाओं की सहभागिता राष्ट्र के महत्वपूर्ण पदों पर आवश्यक मानती हैं, तो कुल उत्तरदाताओं में से 101 उत्तरदाताओं ने हाँ कहा तथा 99 ने नहीं कहा। जिससे ज्ञात है कि अधिकतम 49.5 प्रतिशत महिला उत्तरदाताओं का मानना है कि मुस्लिम महिलाओं की सहभागिता राष्ट्र के महत्वपूर्ण पदों पर आवश्यक नहीं मानती हैं व न्यूनतम 50.5 प्रतिशत उत्तरदाता मुस्लिम महिलाओं की सहभागिता को राष्ट्र के महत्वपूर्ण पदों पर आवश्यक मानती हैं।

निष्कर्ष

1. मुस्लिम महिलाएं सीधे तौर पर नहीं बताती कि राजनीति में सक्रिय रूप से आना चाहती हैं। बस इन महिलाओं की सोच है कि मुस्लिम महिलाओं को राजनीति में सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए। क्योंकि ज्यादातर ये महिलाएं राजनीति को ले कर उदासीन ही हैं। ये सिर्फ एक वोटर के रूप में खुद के प्रयोग से दुःखी हैं और राजनीति में अपनी पहचान बनाना चाहती हैं।

2. बहुत ही न्यूनतम मुस्लिम महिलाएं किसी राजनीतिक दल की सदस्य हैं। 98.5% ऐसी महिलाएं हैं जो किसी भी राजनीतिक दल सदस्य नहीं हैं।

3. मुस्लिम महिलाएं राजनीति में इसलिए भी नहीं आना चाहती कि राजनीति का माहौल अच्छा नहीं है राजनीति में ज्यादातर लोग अपराधिक मामलों में लगे हुए हैं तथा यह महिलाएं राजनीति में खुद को असुरक्षित महसूस करती हैं।

4. मुस्लिम महिलाओं ने बताया कि पुरुष नहीं चाहते कि कोई भी मुस्लिम महिला राजनीति में उनसे आगे निकले या उनकी बराबरी करे, खासकर निम्न वर्ग की महिला। अगर मुस्लिम महिलाएं राजनीति में पुरुषों से आगे निकल गईं तो उनकी पुरुषवादी मानसिकता को धक्का लगेगा इसलिए वह ऐसा बिल्कुल नहीं चाहेंगे कि महिलाएं राजनीति में सक्रिय भूमिका निभाएं।

5. सरकार द्वारा चलाई गई नीतियों और योजनाओं के बारे में अधिकांश मुस्लिम महिलाएं जानती हैं। मुस्लिम महिलाएं सरकार की नीतियों और योजनाओं में केवल राशन वितरण, जन धन योजना, उज्ज्वल योजना, आवास योजना, आयुष्मान योजना इन सभी के बारे में जानती हैं।

6. आज समाज में मुस्लिम महिलाओं की दशा से अनजान कोई नहीं है उनकी समाज में क्या हालत है इस बात से सब बखूबी वाकिफ हैं, इसके विपरित बाकी दूसरे मजहब की महिलाएं शिक्षा, विकास, अधिकारों का प्रयोग करने में इन महिलाओं से काफी आगे हैं। मुस्लिम महिलाओं की अपेक्षा हिंदू महिलाएं राजनीति में अधिक सक्रिय होती हैं।

7. मुस्लिम महिलाओं का ऐसा कहना है कि ऐसी कोई सरकार या राजनीतिक दल नहीं है जो विशेष रूप से मुस्लिम महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए कार्य कर रहा हो। अगर कुछ बढ़ावा हुआ या बढ़ावा भी दिया गया है तो वह हर वर्ग की महिलाओं के लिए किया गया है, विशेष रूप से मुस्लिम महिलाओं के लिए कोई कार्य नहीं किया गया। फिर भी भाजपा (मोदी सरकार) ने काफी हद तक मुस्लिम महिलाओं के लिए आवाज उठाई और कानून बनाए हैं इससे हम सभी सहमत हैं। जैसे— घर की महिला मुखिया, कई योजनाएं महिलाओं के नाम पर, तीन तलाक कानून विधेयक।

8. अधिकांश मुस्लिम महिलाओं का मानना है कि मुस्लिम महिलाएं हर एक पार्टी के लिए वोट बैंक ही रही हैं और काफी महिलाओं की सोच है कि पूरा मुस्लिम समाज सभी पार्टियों के लिए केवल एक वोट बैंक की भूमिका ही निभा रहा है। किसी भी पार्टी या दल ने मुस्लिम महिलाओं के लिए कोई विशेष प्रावधान नहीं किया है।

9. अधिकांश मुस्लिम महिलाओं का मानना है कि राष्ट्र के महत्वपूर्ण पदों पर कोई मुस्लिम महिला होनी चाहिए। क्योंकि जो हमारी समस्याएं हैं उनका हम ही समाधान आसानी से कर सकते हैं जो जिस पर बीतती है वही जानता है। लेकिन कुछ महिलाओं का मानना है कि मुस्लिम महिलाओं के लिए बहुत सारे ऐसे हालात सामने आते हैं जिसकी वजह से वह राजनीति में अपनी भागीदारी को लेकर भ्रमित होती हैं और अपनी सियासत में कोई भूमिका नहीं निभा पातीं।

अध्ययन के विश्लेषण ज्ञात है कि भारतीय समाज में मुस्लिम महिलाओं की सामाजिक एवं राजनीतिक स्थिति अनेक दृष्टियों से विशिष्ट है। परिणामस्वरूप उन्हें ऐसी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जो अन्य वर्गों की महिलाओं की अपेक्षा अधिक जटिल एवं बहुआयामी हैं। सामाजिक बहिष्करण, सीमित शैक्षिक अवसर, आर्थिक निर्भरता, रूढ़िवादी

परंपराएँ, पर्दा प्रथा तथा पितृसत्तात्मक सामाजिक संरचना उनके समग्र विकास और राजनीतिक सहभागिता को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारक हैं। यद्यपि भारतीय संविधान सभी नागरिकों को समान अधिकार प्रदान करता है, तथापि व्यवहारिक स्तर पर मुस्लिम महिलाओं को अपने अधिकारों के प्रभावी उपयोग में अनेक बाधाओं का सामना करना पड़ता है।

अध्ययन से यह भी ज्ञात हुआ कि धार्मिक व्याख्याओं, सामाजिक रूढ़ियों तथा पारंपरिक सत्ता संरचनाओं ने मुस्लिम महिलाओं की राजनीतिक सक्रियता को सीमित किया है। अधिकांश उत्तरदात्रियों का मत है कि धार्मिक संस्थाओं अथवा सामुदायिक नेतृत्व द्वारा राजनीतिक निर्णयों में अत्यधिक हस्तक्षेप लोकतांत्रिक मूल्यों के अनुरूप नहीं है। राजनीतिक जागरूकता बढ़ाने के विभिन्न प्रयासों के बावजूद महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी अपेक्षित स्तर तक विकसित नहीं हो सकी है, जिसके पीछे सामाजिक संकोच, अवसरों की कमी तथा राजनीतिक व्यवस्था के प्रति सीमित विश्वास जैसी परिस्थितियाँ भी उत्तरदायी हैं। साथ ही, यह भी परिलक्षित हुआ कि अनेक मुस्लिम महिलाओं के मन में शासन-प्रशासन एवं राजनीतिक व्यवस्था के प्रति आंशिक अविश्वास विद्यमान है। उनका अनुभव है कि कभी-कभी मुस्लिम समुदाय से जुड़े मुद्दों को पूर्वाग्रहपूर्ण दृष्टि से प्रस्तुत किया जाता है, जिससे सामाजिक दूरी एवं असुरक्षा की भावना उत्पन्न होती है। इसके बावजूद यह विश्वास पूरी तरह समाप्त नहीं हुआ है। शिक्षा, सामाजिक जागरूकता तथा संवैधानिक अधिकारों के प्रति बढ़ती समझ के कारण मुस्लिम महिलाओं में अपने भविष्य को लेकर सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित हो रहा है। वे शिक्षा, आत्मनिर्भरता और लोकतांत्रिक सहभागिता के माध्यम से अपने जीवन स्तर में सुधार लाने तथा समाज की मुख्यधारा में सम्मानजनक स्थान प्राप्त करने के प्रति आशावान हैं।

संदर्भ

1. खान, मुमताज अली (1982), 'स्टेट्स ऑफ़ रूरल वूमन इन इंडिया', विपल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।
2. सिद्दीकी, एच.वाई. (1987), 'मुस्लिम वुमन इन टॉजिशन ए सोशल प्रोफाइल', हरनाम पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
3. घोष, श्रीकान्त (1987), 'मुस्लिम पोलिटिक्स इन इण्डिया', ए.पी.एच., पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।
4. लतिफ, शाहिदा (1990), 'मुस्लिम वूमन इन इण्डिया पॉलिटिकल एण्ड प्राइवेट रियलटिस 1890-1980', जेड बुक्स रेडिकल इंटरनेशनल पब्लिशिंग, लंदन।
5. कुमारी, रंजना (1992), 'वूमन इन डीसिजन मेकिंग', विकास पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।
6. अजीम, शौकत (1997), 'मुस्लिम वूमन इमर्जिंग आइडेन्टीटी', रावत पब्लिकेशन, जयपुर और नई दिल्ली।
7. मिश्र, अनिल दत्त (1990). जेंडर पर्सपेक्टिव: पार्टिसिपेशन, एम्पावरमेंट एंड डेवलपमेंट। नई दिल्ली: राधा पब्लिकेशन।
8. सिन्हा, नीरजा (2000). विमेन इन इंडियन पॉलिटिक्स: एम्पावरमेंट पॉलिटिकल पार्टिसिपेशन। नई दिल्ली: ज्ञान पब्लिशिंग हाउस।
9. पारुथी, राजकुमारी एवं पारुथी, रामेश्वरी (2001). विमेन इन लॉ एंड पॉलिटिक्स। जयपुर: मंगलदीप पब्लिशर्स।
10. अहमद, नसीम (2003). विमेन इन इस्लाम। नई दिल्ली: ए.पी.एच. पब्लिशिंग हाउस।
11. हसन, जोया (2003). "मुस्लिम समाज में महिलाओं की बदहाली का कारण धार्मिक नहीं, आर्थिक।" हंस, अगस्त अंक, नई दिल्ली।
12. डॉयचे वेले हिन्दी. "यूनिफॉर्म सिविल कोड का मुस्लिम महिलाओं पर संभावित प्रभाव।" उपलब्ध: <https://amp-dw-com/hi/what&would&uniform&civil&code&mean&for&muslim&women/a&66498619> (अभिगमन तिथि: 27 जुलाई, 2026)।
13. बीबीसी हिन्दी. "भारत में मुस्लिम महिलाओं से संबंधित समकालीन परिप्रेक्ष्य।" उपलब्ध: <https://www-bbc-com/hindi/india&41021808> (अभिगमन तिथि: 27 जुलाई, 2026)।